मुंशी प्रेमचंद कृत नाटक

कर्बला : रंगमंचीयता

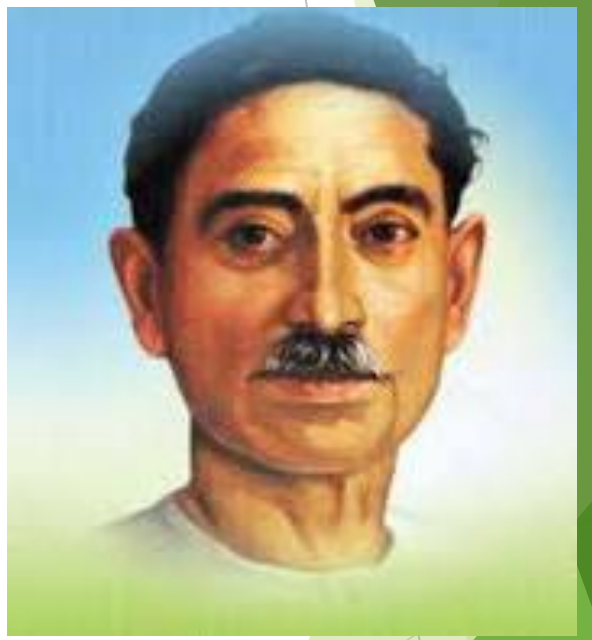

डॉ. राजेन्द्र सिंह

आचार्य, हिन्दी विभाग

Email : rajendersingh@mgcub.ac.in

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय

मोतिहारी, बिहार

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा छठा सेमेस्टर

पाठ्यक्रम : प्रेमचंद HIND 3026

मुंशी प्रेमचंद का जीवनकाल

31 जुलाई 1880 - 8 अक्तूबर 1936

- यह समय भारत में अंग्रेजों की गुलामी का समय था।
- लेखकों और सृजनकर्मियों पर अंगेजों की विशेष निगाह रहती थी।
- मुंशी प्रेमचंद की 'सोजेवतन' कहानी संग्रह को जब्त भी कर लिया गया था। इसका बड़ा कारण यही था कि इस संग्रह की कहानियों के पात्र स्वतंत्रता आंदोलन के लिए जनमानस का निर्माण करने की भूमिका निभा रहे थे।

मुंशी प्रेमचंद हिन्दी साहित्य में आधुनिक काल के एक अति महत्त्वपूर्ण साहित्यकार हैं। उन्होंने कहानी, उपन्यास, निबंध एवं आलोचना में बेहतरीन साहित्य की रचना की है।

लगभग 300 कहानियां लिखी। जो मानसरोवर के 8 भागों में संकलित हैं।

बड़े घर की बेटी, नमक का दरोगा, सत्याग्रह, कफन, शतरंज के खिलाड़ी, पंच परमेश्वर, बूढ़ी काकी, नशा, सवा सेर गेहूं, पूस की रात इनकी सुप्रसिद्ध कहानियां हैं।

प्रेमचंद को 'कथा सम्राट' और 'उपन्यास सम्राट' भी कहा जाता है।

मुंशी प्रेमचंद के मुख्य उपन्यास निम्न प्रकार हैं –

कर्मभूमि, निर्मला, गबन, गोदान, रंगभूमि, प्रतिज्ञा, प्रेमा, प्रेमाश्रम, सेवासदन, कायाकल्प

'मंगलसूत्र' उनका अधूरा उपन्यास है, 'दुर्गादास' एक बालोपयोगी उपन्यास है

प्रेमचंद ने तीन नाटक भी लिखे

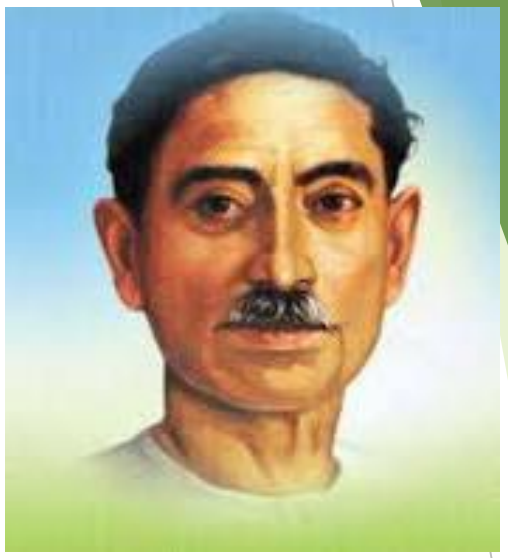

- **प्रेम ही वेदी**
- **संग्राम**
- **कर्बला**

- 'कर्बला' एक ऐतिहासिक-धार्मिक नाटक है। जो 1924 में लिखा गया था।
- भारत के तेज होते स्वतंत्रता संग्राम में मुंशी प्रेमचंद भारतीय समाज में हिन्दू और मुस्लिम वैमनस्य से बेहद चिंतित थे। धर्मिक सामंजस्य स्थापित करने के लिए उन्होंने कर्बला नाटक की रचना की।
- वे सोचते थे कि राजनीतिक आजादी तभी मिल सकती है यदि हिन्दू और मुसलमान दोनों मिलकर अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई लड़ें तो।

युग निर्धारण

- नाटक के विकास-क्रम की दृष्टि से मुंशी प्रेमचंद प्रसाद युग के अंतर्गत आते हैं। प्रसाद युग का समय 1920-36 तक माना जाता है।
- प्रसाद युग में हरिकृष्ण प्रेमी, अंबिकादत्त त्रिपाठी, रामचरित उपाध्याय, रामनेरेश त्रिपाठी, गंगा प्रसाद अरोड़ा, वियोगी हरि, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' गणेश दत्त इंद्र, भंवरलाल सोनी, चंद्रराज भंडारी, ज्ञानचंद्र शास्त्री, जिनेश्वर प्रसाद भायल, उदयशंकर भट्ट आदि
- युग की परिस्थितियों के अनुरूप इस काल में ऐतिहासिक और पौराणिक नाटक रचे गए। इस काल में सामाजिक समस्याओं पर भी नाटकों की रचना हुई।
- रंगमंच को लेकर इस काल में कई स्थापनाएं हो रही थीं। जयशंकर प्रसाद के नाटकों पर भी रंगमंच को लेकर अनेक प्रश्न खड़े हुए थे।

- भारतीय नाट्यशास्त्र में दृश्य-काव्य को ही नाटक कहा जाता है।
- आधुनिक काल में मुद्रण तकनीक आ जाने के बाद नाटक के दो रूप हो गए -
  - पाठ्य नाटक
  - अभिनय नाटक

- जयशंकर प्रसाद ने पुस्तक 'काव्यकला एवं अन्य निबंध' में लिखा है, ''काव्यों के अनुसार प्राचीन रंगमंच विकसित हुए और रंगमंच की नियमानुकूलता मानने के लिए काव्य बाध्य नहीं हुए।''

नाटक और रंगमंच का संबंध दो रूपों में स्वीकार किया जाता है -

1. कि नाटक रंगमंच के लिए लिखे जाते हैं
2. कि रंगमंच नाटक के लिए होते हैं।

प्रसाद युग के नाटककारों का मत आम तौर पर यह रहा कि रंगमंच नाटक के लिए होते हैं। अर्थात् रंगमंच को नाटक के अनुरूप स्वयं को ढालना होगा।

नाटक की रंगमंचीयता के लिए आवश्यक बिन्दु

- 1. कथानक
- 2. कथोपकथन
- 3. दृश्य योजना, संकलनत्रय
- 4. पात्र योजना

‘कर्बला’ नाटक का कथानक

- नाटक का कथानक मौलिक
- जिज्ञासावर्द्धक
- संतुलित
- रोचक
- प्रेरणादायी
- समाज-संपृक्त

‘कर्बला’ नाटक का कथानक

‘कर्बला’ नाटक का कथानक मौलिक है। प्रेमचंद जी ने हिन्दी के पाठकों के लिए मुस्लिम धर्म की एक ऐतिहासिक घटना को आधार बनाकर नाटक की रचना की है

कथानक न अधिक लंबा है न छोटा, हालांकि जब यह लिखा गया तो स्वयं प्रेमचंद ने भी आशंका जताई थी कि यह शायद मंच पर ने अभिनीत किया जा सके। परंतु अधुनातन विकसित तकनीक के आगमन से यह संभव है।

उन्होंने कहा, “हमने यह नाटक खेले जाने के लिए नहीं लिखा, मगर हमारा विश्वास है कि यदि कोई इसे खेलना चाहे तो थोड़ी बहुत काट-छांट के साथ खेल भी सकता है।”

और अधुनातन विकसित तकनीक के आगमन से यह संभव भी हुआ है।

इसका कथानक पांच अंकों और कुल 42 दृश्यों में विस्तृत है।

नाटक के कथानक में कई दृश्य तो ऐसे हैं जिनको हटाया भी जा सकता है। और जिससे इसके मूल उद्देश्य पर भी कोई असर नहीं पड़ेगा।

‘कर्बला’ नाटक का कथानक

- ‘कर्बला’ नाटक के कथानक में मुआबिआ द्वारा अपने वचन से फिरना।
- यज़ीद का महत्त्वाकांक्षी होना
- कूफा के लोगों द्वारा इमाम हुसैन को अपनी रक्षा के लिए बुलावा भेजना
- इमाम हुसैन का उनके रक्षार्थ आना और यजीद द्वारा कूफा के लोगों को तरह तरह के प्रलोभन देना
- कूफा के लोगों का इमाम हुसैन की मदद करने से मुकर जाना।
- इमाम हुसैन की 72 लोगों की छोटी सी टुकड़ी और दूसरी और बाईस हजार सिपाहियों की विशाल सेना कथानक में रोचकता पैदा करती है।
- इमाम हुसैन का बार-बार संधि का प्रस्ताव भेजना और यजीद की सेना द्वारा ठुकरा देना।
- इमाम हुसैन की सेना का एक एक सैनिक बारी बारी से मरना और अंत में उसका परिवार भी कत्लेआम कर दिया जाना। ये सारे दृश्य नाटक को अंत तक रोचक जिज्ञासावर्द्धक बनाए रखते हैं।

‘कर्बला’ नाटक का कथानक

- ‘कर्बला’ नाटक का कथानक मौलिक है।
  - कथानक शुरू से अंत तक पाठकों और दर्शकों को बांधने में पूरी तरह सक्षम है।
    - नाटक का महती प्रयोजन यही है कि यह गैर मुस्लिम समाज को मुस्लिम संस्कृति में त्याग, बलिदान, समर्पण से परिचित करवाता है।
    - नाटक में पांच अंक हैं – अंक 1 में सात, अंक 2 में तेरह, अंक 3 में सात, अंक 4 में नौ, अंक 5 में छह दृश्य हैं। इस प्रकार 5 अंकों में कुल 42 दृश्य हैं।
    - कथानक समाज संपृक्त एवं महती संदेश लिए हुए है।

सांप्रदायिक सद्भाव पैदा करना

- हिन्दू-मुस्लिम सौहार्द विकसित करना समय की मांग थी।
  - अंग्रेज भारतीय समाज में व्याप्त विभिन्नताओं के आधार पर फूट डालो और राज करो की नीति पर चलते हुए हिन्दू और मुसलमानों को आपस में लड़ा रहे थे।
    - मुंशी प्रेमचंद एक युगद्रष्टा साहित्यकार थे।
      - वे हिन्दुओं को त्यागी, समर्पित, कर्त्तव्यपरायणता और सेवाभावना से परिपूर्ण मुस्लिम चरित्रों से परिचित कराना चाहते थे।
        - मुस्लिम धर्म में भी हिन्दू, बौद्ध, सिक्ख, जैन और ईसाई धर्म के समान की त्याग और बलिदान की गाथाएं भरी पड़ी हैं, जिनसे मुसलमानों का व्यवहार संचालित होता है।
      - सभी धर्मों को परस्पर जानना ही सांप्रदायिक समस्या का समाधान है।
    - इमाम हुसैन की धार्मिक उच्चाशयता से प्रभावित होकर हिन्दुओं ने भी इस युद्ध में उनका साथ दिया और साहसराय व उनके छह भाई भी मारे गए।
- प्रेमचंद हिन्दुओं द्वारा इमाम हुसैन की सहायता करना इस नाटक के रचनाकाल 1924 में विशेष महत्त्व रखता है।

कथोपकथन

- कथोपकथन का दूसरा नाम संवाद भी है।
- नाटक मंच पर खेली जानी विधा है। इसलिए संवाद जरूरी तत्त्व है।
- अभिनेता संवादों के ही माध्यम से प्रस्तुत होते हैं।
- नाटक के संवाद संक्षिप्त, चुटीले, स्वाभाविक, भावानुकूल, पात्रानुकूल हों तो नाटक की सफलता और बढ़ जाती है।
- संवादों से ही पात्रों की मनःस्थिति स्पष्ट रूप से प्रकट होती है।
- 'कथोपकथन' से पात्रों के बीच बातचीत का प्रवाह अभिप्रेत होता है।
- संवादों में बातचीत में त्वरितता का विशेष महत्त्व है।

कथोपकथन

'कर्बला' नाटक के संवाद संक्षिप्त, चुटीले, स्वाभाविक, भावानुकूल, पात्रानुकूल हों तो नाटक की सफलता और बढ़ जाती है। कर्बला नाटक में संवादों से ही पात्रों की मनःस्थिति स्पष्ट रूप से प्रकट होती है। एक उदाहरण दर्शनीय है, नाटक के अंत में जब शिमर हुसैन को मारता है तो उस समय के संवाद बहुत ही कारुणिक हैं –

हुसैन : तू कौन है?

शिमर : मेरा नाम शिमर है।

हुसैन : मुझे पहचानता है?

शिमर : मेरा नाम शिमर है।

हुसैन : मुझे पहचानता है?

शिमर : खूब पहचानता हूं। तुम अली और फातिमा के बेटे और मुहम्मद के नवासे हो।

हुसैन : यह जानकर भी तू कत्ल करता है?

शिमर : मुझे जन्नत से ज्यादा जागीरें प्यारी हैं।

कथोपकथन

नाटक में अधिकांश संवाद संक्षिप्त हैं। परंतु कहीं कहीं बड़े भी हो गए हैं। परंतु यह नाटक के उद्देश्य और पात्रों के अनुसार ही हैं। प्रेमचंद जी इस मामले में एक सचेत नाटककार हैं।

वैसे भी यह नाटक लिखते समय प्रेमचंद के मन में विषयवस्तु ही अधिक महत्त्वपूर्ण रही।

नाटक के संवाद पात्रों स्वाभिमान, दंभ, विवशता आदि साफ देखने को मिलते हैं।

दृश्य योजना, संकलनत्रय

- संकलनत्रय में तीन चीजों का संयोजन होता है – समय, स्थान एवं कार्य एकता
- इसे देशकाल वातावरण भी कह सकते हैं।
- नाटककार नाटक में पाठकों की विश्वसनीयता के लिए देशकाल वातावरण का विशेष ध्यान रखता है।
- उसे उस समय को साकार करना होता है, जिस समय के घटनाक्रम को वह कथानक में ले रहा होता है।
- इस दृष्टि से उसे विशेष श्रमसाध्य परिश्रम करना पड़ता है।

दृश्य योजना, संकलनत्रय

- मुंशी प्रेमचंद देशकाल वातावरण की दृष्टि से भी एक श्रेष्ठ नाटक है।
- यजीद से जुड़े हुए सभी दृश्यों में कोई खास परिवर्तन की जरूरत नहीं पड़ती है।
- इमाम हुसैन से जुड़े हुए दृश्य भी थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ आसानी से उपस्थित किए जा सकते हैं।
- कूफा शहर की गलियों, जामा मस्जिद, बाजार, घरों, यजीद के आतंग से अफरातफरी, हुसैन के चचेरे भाई मुस्लिम का मारा जाना आदि दृश्य आंखों के सामने जीवंत दृश्य उपस्थित करते हैं।
- कर्बला की युद्धभूमि के दृश्य, फरात नदी के पास होते हुए भूख से विह्वल हुसैन के खेमे के सभी लोग।
- नाटक में सभी घटनाओं के काल में कोई बहुत अधिक अंतर नहीं है। वे एक ही समय की हैं व एक ही स्थान से जुड़ी हुई हैं।
- मुंशी प्रेमचंद ने पात्रों की भाषा का भी विशेष ध्यान रखा है। इससे भी संकलनत्रय में मदद मिलती है।

पात्र-योजना

- पात्र के ही माध्यम से नाटक मंच पर खेला जा सकता है।
  - किसी भी नाटक में पात्रों की संख्या जितनी कम होगी, दर्शकों को उसे समझने और सामंजस्य बिठाने में उतनी ही आसानी होगी
    - पात्रों का स्वाभाविक और विश्वसनीय होना अनिवार्य है।
      - किसी भी नाटक में पात्र दो प्रकार के होते हैं - 1. मुख्य पात्र, 2. गौण पात्र
    - मुख्य पात्र मुख्य कथा से जुड़े होते हैं
  - गौण पात्र मुख्य कथा को आगे बढ़ाने में सहायक होते हैं।

पात्र-योजना

- कर्बला नाटक में कुल पात्रों की संख्या 30 के आसपास बैठती है। जो नाटक के मंचन और अभिनेयता की दृष्टि से बहुत अधिक है।
  - एक तो इतने अधिक पात्र नाटक की दुरूहता को बढ़ा देते हैं, दूसरे दर्शकों के लिए भी यह कम दुविधाजनक नहीं है। दर्शक उन्हें समझने में ही लगा रहेगा।
    - 'कर्बला' नाटक में मुख्य पात्रों में इमाम हुसैन, यज़ीद, साद, जियाद और शिमर आदि है। और गौण पात्रों में मुआबिआ, मुसलिम, वहब, जैनब, नसीमा अब्बास, हुर और रायबंधु आदि।
      - जहां तक पात्रों की अधिकता की बात है तो एक पात्र कई पात्रों का भी अभिनय कर सकता है। जैसे रायबंधुओं का किरदार कोई पात्र निभा सकता है, क्योंकि मंच पर उनका अवतरण बहुत ही कम समय के लिए होता है।
    - इसी प्रकार मदीना का नाजिम वलीद, मक्का का उमर जुबेर, सज्जाद, अब्बास, हज्जाज आदि भी अलग-अलग भूमिकाएं कर सकते हैं।
  - क्योंकि सभी पात्र एक ही धर्म से जुड़े हैं, इसलिए उनकी वेशभूषा आदि में कोई बहुत अधिक बदलाव की आवश्यकता नहीं है। थोड़े-बहुत बदलाव से ही पात्र नई भूमिकाएं निभा सकते हैं।

निष्कर्ष

- ‘कर्बला’ नाटक में अभिनेयता की तमाम संभावनाएं मौजूद हैं।
  - अधुनातन विकसित तकनीक के माध्यम से तो इसे मंचन की और अधिक संभावना बढ़ गई है।
    - नाटक में कई जगह गीत संयोजना भी है, जो नाटक में सरसता पैदा करती है।
      - स्वयं प्रेमचंद का कथन भी इसकी अभिनेयता को लेकर काफी महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने लिख है, ‘‘मैंने नाट्य कला और रंगमंच कौशल का भी ज्ञान प्राप्त नहीं किया।’’ और ‘‘आजकल नाटक लिखने के लिएसंगीत का जानना जरूरी है कुछ कवित्व शक्ति भी होनी चाहिए। मैं इन दोनों गुणों से असाधारणतः वंचित हूं।’’
        - मुंशी प्रेमचंद मूलतः कथाकार और उपन्यासकार हैं। उन्होंने मात्र तीन नाटक लिखे। नाटक लिखने का उनका उद्देश्य नाटक की अभिनेयता की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण था।
- वैसे भी प्रेमचंद पहले ही स्वीकार करते हैं कि यह नाटक उन्होंने मंच पर खेले जाने के लिए नहीं लिखा, अपितु पढ़े जाने के लिए लिखा है। इसे पढ़कर प्रेमचंद का उद्देश्य सफल हो जाता है। और वह है मुस्लिम धर्म मे शहादत ही उच्च भावना का दिग्दर्शन कराना।

धन्यवाद